Research Paper IMPACT FACTOR VALUE : 5.983 | E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 11 | ISSUE : 5 | MAY 2025

स्वतंत्रता सेनानी नाथूराम सूत्रकार का जीवन परिचय

मुकेश कुमार पावक [1] | डॉ. श्रीमती मीना श्रीवास्तव [2]

[1] पी-एच.डी. शोधार्थी (इतिहास), जीवाजी विश्वविद्याालय, ग्वालियर.

[2] प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, शासकीय के.आर.जी. स्नातकोत्तर स्वशासी महाविद्यालय ग्वालियर.

ABSTRACT:

-

KEYWORDS:

-

PAPER ACCEPTED DATE:	PAPER PUBLISHED DATE:
25th May 2025	30th May 2025
PAPER DOI NO:	**PAPER DOI LINK:**
10.5281/zenodo.17623097	https://zenodo.org/records/17623097

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता सेनानी श्री नाथूराम सूत्रकार का जन्म 14.08.1916 ई. को ग्राम बांकापहाड़ी जो कि वर्तमान में झाँसी उत्तर प्रदेश के जिले में स्थित है वहाँ हुआ था। ग्वालियर राज्य में आजादी का संघर्ष नामक पुस्तक के तृतीय खण्ड में जन्म तारीख 10 दिसम्बर 1922 प्राप्त होती है। नाथूराम सूत्रकार के पिता का नाम बंसत सूत्रकार एवं माता का नाम गुमानोबाई था। नाथूराम सूत्रकार के चार पुत्र हुये जिनके नाम है डॉ. खेमचन्द्र दीवान, धनीराम दीवान, स्व. श्री होतीलाल दीवान और स्व. डॉ. रमेशचन्द्र दीवान जो कि प्राकृतिक चिकित्सक थे। नाथूराम सूत्रकार की शिक्षा -दीक्षा बांकापहाड़ी ग्राम में चैथी कक्षा तक ही हुई थी। आप बचपन से ही देश-प्रेम की भावना से ओतप्रोत थे।

भारत में हो रहे स्वतंत्रता आन्दोलनों से नाथूराम सूत्रकार बचपन से ही प्रभावित थे और इस कारण वे देश को स्वतंत्र कराने में संलग्न हो गये। इसके साथ-साथ वे अपनी कविताओं के माध्यम से जन जागृति भी फैला रहे थे।

स्वतंत्रता सेनानी नाथूराम का स्वतंत्रता संघर्ष में महत्वपूर्ण योगदान रहा है नाथूराम जी का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान प्रस्तुत करने से पहले झाँसी क्षेत्र में हो रहे स्वतंत्रता संघर्ष पर संक्षेप में प्रकाश डालना अतिआवश्यक है।

भारत में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम 1857 ई. में हुआ और 1858 ई. तक आते आते विकराल रूप धारण कर लिया था। अँग्रेजी सरकार ने 1853 ई. में झाँसी के राजा गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात् झाँसी पर अधिकार कर लिया। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ब्रिटिश फोर्स से पराजित होने के कारण झाँसी के किले से निकल कर ग्वालियर आ गई ग्वालियर में सिंधिया सेना के साथ 1858 ई. में रानी लक्ष्मीबाई का संघर्ष हुआ और रानी को विजय प्राप्त हुई साथ में यह भी उल्लेख प्राप्त होता है कि कुछ दिनों तक रानी लक्ष्मीबाई का ग्वालियर किले पर अधिकार रहा था। रानी लक्ष्मीबाई 18 जून 1858 ई. में स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान शहीद हो गई। रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु के पश्चात् भारत में स्वतंत्रता प्राप्ति तक निरन्तर संघर्ष होते रहे। इन संघर्षो के प्रत्यक्षदर्शी भारत के अनेक मानव थे। नाथूराम सूत्रकार का लालन पालन भी इसी माहौल में हुआ था। सूत्रकार जी आन्दोलन और सत्यग्रहों से अनभिज्ञ नहीं थे।

नाथूराम सूत्रकार जी ने 1936 ई. से ही आजादी के आन्दोलनों में भाग लेना आरंभ कर दिया था और अपने साथी नेताओं जैसे पंचम लाल, जैन, प्रेमनारायण खरे, नारायणदास खरे, चतुर्भज पाठक, लालाराम जी, लक्ष्मीनारायण इत्यादि के सहयोग से कई रियासतों में होने वाले आन्दोलनों में हिस्सा लेकर कार्य करते रहे।

नाथूराम सूत्रकार के संबंध में यह उल्लेख प्राप्त होता है, कि वे गाँधीवादी विचारधारा के समर्थक थे। सन् 1938 ई. में इस समय द्वितीय विश्वयुद्ध की गतिविधियाँ तीव्र हो रही थी उस समय अँग्रेजी सरकार ने भारतीयों को बिना ऐलान किये युद्ध हेतु अपनी सेना में सम्मिलित करना आरंभ कर दिया था। इसी कारण पूरे भारत में अँग्रेजी सत्ता के विरूद्ध प्रदर्शन हुये। ऐसे ही प्रदर्शन कार्य में नाथूराम सूत्रकार ने टोडी फतेपुर जो कि वर्तमान में उत्तर प्रदेश राज्य के झाँसी जिले का हिस्सा है वहीं पर सूत्रकार जी ने 1938 ई. में प्रतिभागिता की इस प्रदर्शन में सरकार द्वारा लाठी चार्ज किया गया जिस कारण नाथूराम सूत्रकार के बाऐं पैर की हड्डी टूट गई और उन्हें मैहर की बंशीपुरा जेल में बंदी बनाकर रखा गया।

द्वितीय विश्वयुद्ध होने से पहले भारत का मजदूर वर्ग साम्राज्यवाद के विरोध में और राष्ट्रीय मांगो के समर्थन में जबरदस्त राजनीतिक प्रदर्शन और हड़ताल करने लगा था। इस समय स्पष्टतः राष्ट्रीय आन्दोलन में मजदूरों द्वारा किया जा रहा अँग्रेजी सरकार का प्रतिकार भी दृष्टिगोचर हो रहा था और इसी क्रम में नाथूराम सूत्रकार जी ने उत्तरदायी अँग्रेजी शासन एवं तात्कालिक मांगो के समर्थन में भारतीय नेताओं को सहयोग प्रदान करते हुये अँग्रेजों के खिलाफ सन् 1941 ई. में प्रतिभागिता की और जिसके परिणामफलस्वरूप उन्हें तीन माह तक जेल की यातना भुगतनी पड़ी। उन्हें चरखारी जेल में रखा गया था।

महात्मा गाँधी के द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन सम्पूर्ण भारत में 9 अगस्त 1942 को आरंभ किया गया। गाँधी जी के द्वारा चलाये गए इस भारत छोड़ों आन्दोलन में भारत के वीर देश प्रेमियों के साथ नाथूराम सूत्रकार ने भी प्रतिभागिता की और इस कारण अंग्रेजी सरकार ने उनका जिला बदल कर दिया। इसके बावजूद भी नाथूराम सूत्रकार ने हिम्मत नहीं हारी और ना ही भारत देश की स्वतंत्रता के प्रति जुनून कम हुआ। इसी जुनून और स्वतंत्रता की चाह

लिये वे निरन्तर आन्दोलनों में भाग लेते रहे। अतः जब तक अँग्रेज भारत को छोड़कर चले नहीं गये और देश को आजादी नहीं मिल गई तब तक नाथूराम जी निरन्तर संघर्षरत् रहे।

भारतीय स्वतंत्रता के उपरान्त आजीविका की तलाश में नाथूराम सूत्रकार ग्वालियर आ गये और यहाँ पर वे जे.सी मिल में कार्य करने लगे। उन्होने लगभग 32 वर्षो तक यहीं कार्य किया और वे ग्वालियर के निवासी हो गये। वर्तमान में निज निवास स्थान न्यू कॉलोनी नं.-1 क्वाटर क्रमांक नं. 101 बिरला नगर ग्वालियर है नाथूराम सूत्रकार मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी (स्वतंत्रता सेनानी प्रकोष्ठ) के जीवन पर्यन्त तक सदस्य रहे।

नाथूराम सूत्रकार एक महान व्यक्तित्व एवं कृतित्व के धनी थे। इन्होंने न केवल आन्दोलनों में भाग लेकर देश की स्वतंत्रता में अपना योगदान दिया बल्कि अपने साहित्यिक कृतियों के माध्यम से अभूतपूर्व योगदान दिया सूत्रकार जी बचपन से ही काव्य रचनाऐं लिखते थे। इन्होंने अपने जीवनकाल में अनेक व्यग्य, छन्द, कविताएँ, बुंदेली लोकगीत, कहानी लिखे। इन्होंने अपने साहित्य कृतियों के माध्यम से समाज को एक नयी दिशा दी और देश प्रेम की भावना को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

सन् 29 नवम्बर 2021 ई. को नाथूराम सूत्रकार जी का स्वर्गवास हो गया और हमारे बीच से एक अतुलनीय कवि, समाज सुधारक, प्रेरणा पुरूष, स्वतंत्रता सेनानी ईश्वर को प्यारा हो गया। धन्य है वह झाँसी की बांकापहाड़ी की पावनभूमि जिसने श्री नाथूराम सूत्रकार जैसे निडर, साहसी, कर्तव्यपरायण वीर भारत देश को प्रदान किया। आपकी गौरव गाधा से ग्वालियर की धरा सदैव गौरवान्वित रहेगी।

REFERENCES

1. कुशवाहा यशवंत सिंह: ग्वालियर राज्य आजादी का संघर्ष पृष्ठ 97 तृतीय खण्ड, प्रकाशक यशवंत सिंह कुशवाह, 19 लक्ष्मीबाई कॉलोनी ग्वालियर जुलाई 1986.

2. मिश्र, सुरेश: ग्वालियर रियासत में 1857 ई. का महासंग्राम पृ. क्र. 70, प्रकाशक निशा पब्लिकेशन दिल्ली संस्करण प्रथम 2018.

3. वर्मा, दीनानाथ: आधुनिक भारत प्रकाशक ज्ञानदा प्रकाशक नई दिल्ली 110002 संस्करण 2007.

4. कामे एण्ड मैनेसन: हिस्ट्री ऑफ दि इंडियन म्यूनिटी जिल्द तीन पृ. 209 एवं श्रीवास्तव मीना - 1857 ई. के क्रान्ति में ग्वालियर क्षेत्र के शहीदों की यशोगाथा (शोधपत्र) 1857 ई. का महासफर पृ.क्र. 282 व 283, सम्पादन राजेन्द्र कुशवाह, प्रकाशक अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना नई दिल्ली, प्रथम संस्करण-2009.

5. कुशवाहा यशवंत सिंह: ग्वालियर राज्य में आजादी का संघर्ष पृ.क्र. 10 प्रकाशक यशवंत सिंह कुशवाह 19 लक्ष्मीबाई कॉलोनी ग्वालियर जुलाई 1986.